प्रस्तावना

मुगल साम्राज्य के विघटन के साथ ही छोटी–बड़ी रियासतों का प्रादुर्भाव होने लगा। अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में कई राजनैतिक इकाईयाँ विभक्त होती चली गईं जिन्हें देशी राज्य या रियासत कहा जाने लगा। ब्रिटिश काल में इस तरह की देशी रियासतों की संख्या 562 थी। इन रियासतों का कुल रकबा 712508 वर्गमील और जनसंख्या 93189000 थी। जो कि भारत के कुल क्षेत्रफल का 40 प्रतिशत एवं जनसंख्या के हिसाब से 24 प्रतिशत भाग में फैला था। प्रारंभ में ईस्ट इंडिया कंपनी ने देशी रियासतों को बंगाल स्थित अपने राज्य की सुरक्षा की दृष्टि से एक सुरक्षा घेरे के रूप में रखने का प्रयास किया जिसे रिंग फेस की नीति कहा जाता है, जिसके प्रवर्तक तात्कालीन गवर्नर लार्ड हेस्टिंग थे। इस नीति को बाद के गवर्नर जनरल एवं वायसराय ने भी अपनाया। लार्ड वेलेजली के समय एक दौर ऐसा भी आया जब उसने सहायक संधि के आधार से रियासतों को अंग्रेजी शासन में मिलाने की विस्तृत योजना बनाई और उसमें अमल भी किया। 1857 के बाद कंपनी के शासन समाप्त होने के साथ ही ब्रिटिश सरकार ने रियासतों के प्रति अपनी नीतियों में परिवर्तन किया। इसके बाद रियासत का आंतरिक प्रशासन देखने के लिए वायसराय ने अपने पालिटिकल एजेण्टों को नियुक्त किया । इस प्रकार रियासतें अप्रत्यक्ष रूप से ब्रिटिश सरकार के नियंत्रण में आ गईं। उस समय स्थित भारत की रियासतों को दो हिस्सों में बांटा गया । (अ) सेल्यूट स्टेट्स जिनको सलामी का अधिकार था। (ब) नॉन सेल्यूट स्टेट्स जिनको सलामी का अधिकार नहीं था। अंग्रेजी शासन में भारत में स्थित 462 रियासतों में से 450 रियासतों को ही सलामी का अधिकार नहीं था। ऐसी

रियासतों के अधिकार ब्रिटिश सरकार के द्वारा समय–समय पर इन्हें दी जाने वाली सनदों में परिभाषित किए जाते थे। इन्हें ही करद या सामंत राज्य कहा जाता था। रायगढ़ रियासत भी अंग्रेजी शासन के अंतर्गत करद सामंती राज्य के अंतर्गत आती थी। प्रस्तुत शोध प्रबंध रायगढ़ रियासत के दसवें राजा चक्रधर सिंह, जिनका शासन 1924 से लेकर 1947 तक रहा, के योगदान पर है। इसमें रायगढ़ रियासत की जानकारी, रियासत का गठन एवं वंशावली, राजा चक्रधर सिंह के प्रशासन , साहित्य एवं कला पर विस्तृत शोध परक प्रकाश डाला गया है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध छह अध्यायों में विभक्त है जो निम्नानुसार है –

1. रायगढ़ रियासत का भौगोलिक एवं ऐतिहासिक परिचय.
2. राजा चक्रधर सिंह का जीवन परिचय एवं पारिवारिक परिचय.
3. राजा चक्रधर सिंह का प्रशासन में योगदान.
4. राजा चक्रधर सिंह का साहित्य में योगदान.
5. राजा चक्रधर सिंह का संगीत एवं नृत्य में योगदान.
6. राष्ट्रीय चक्रधर समारोह , आज तक.

प्रथम अध्याय में रायगढ़ की भौगोलिक रचना, जंगल, पहाड़, नदियाँ ,समतल भाग जो धान का कटोरा है, की विवेचना की गई है, इसके साथ ही यहँ की प्रागैतिहासिक, ऐतिहासिक और पुरातात्विक संपदाओं का विशद विश्लेषण किया गया है।

द्वितीय अध्याय में रायगढ़ राजवंश की स्थापना और शासकों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। जिसमें बताया गया है कि रायगढ़ राज्य की स्थापना

बैरागढ़िया राजकुमार मदनसिंह ने आज से कोई तीन सौ वर्ष पहले की थी। मदन सिंह शूरवीर, साहसी और तिलस्मी युवक है उसका कोई प्रमाणिक इतिहास नहीं है। रायगढ़ राज्य के शासक को पहली बार शासक का दर्जा सम्बलपुर राज्य से मिला और वह उसके 18 गढ़जत में से एक था, शासक का नाम था– द्वीप सिंह । रायगढ़ राज्य को विस्तृत, शक्तिशाली और अभेद्य किले के रूप में तब्दील करने का श्रेय राजा जुझार सिंह और उसके पुत्र देवनाथ सिंह को है। जुझार सिंह, जुझारू और कूटनीतिज्ञ तो थे ही, मिलनसार भी थे। देवनाथ सिंह अपने पिता की तरह वीर, साहसी और कूटनीतिज्ञ थे। उसने अंग्रेजो की मदद की और सुरेन्द्र साय, अजीत सिंह जैसे महान योद्धाओं को पकडवाने में कामयाबी हासिल की थी। राजा भूपदेव सिंह प्रजावत्सल्य शासक थे। उनके जमाने में यहाँ रेल–लाईन बिछी और रायगढ़ में देश के विभिन्न प्रांतो से लोग आए और रायगढ़ को औद्योगिक नगरी के रूप में विकसित किया। भूपदेव सिंह संगीत, साहित्य एवं कला के महान संरक्षकों में हैं, इसी पृष्ठभूमि पर राजाचक्रधर सिंह ने संगीत–नृत्य के नये सोपान तैयार किए जिसका भारतीय संगीत के इतिहास में अद्वितीय स्थान है।

तीसरे अध्याय में राजा चक्रधर सिंह के आकर्षक व्यक्तित्व और उनकी प्रशासनिक क्षमताओं पर विस्तार से चर्चा करतु हुए बताया गया है कि राजा चक्रधर सिंह ने प्रशासनिक अमले का पुनर्गठन किया, उसे अंग्रेजी राज्य की नीति के अनुकूल बनाया। राजा चक्रधर सिंह के जमाने में यहाँ पुलिस व्यवस्था, राजस्व और शिक्षा जगत में व्यापक परिवर्तन हुए।

चौंथे अध्याय में राजा चक्रधर सिंह की सांगीतिक उपलब्धियों पर बारीकी से प्रकाश डाला गया है, राजा चक्रधर सिंह अद्वितीय तांडव नर्तन, श्रेष्ठ तबला वादक, सितार और हारमोनियम वादक तो थे ही उन्हें दर्जनों गुरूओं ने शिक्षा दी थी वे नृत्य संगीत के महान संरक्षकों में भी थे। राजा साहब ने जयपुर घराने एवं लखनऊ घराने के उस्तादों को अपने यहाँ नियुक्त कर स्थानीय बालकलाकारों को कथक नृत्य की ऊंची शिक्षा दिलवायी। राजा साहब ने नर्तन सर्वस्व और तालतोय निधि जैसे अद्वितीय संगीत ग्रंथो की रचना की है।

पांचवे अध्याय में राजा साहब के साहित्यिक योगदान की चर्चा है। राजा चक्रधर सिंह हिन्दी, संस्कृत और उर्दू के विद्वान थे। वे कवि, शायर, नाटकार और उपन्यास लेखक थे। राजा चक्रधर सिंह रचित रम्यरास और बैरागढ़िया राजकुमार उनकी अक्षयकीर्ति के आधार है। राजा चक्रधर सिंह उर्दू, हिंन्दी के सेतु तो थे, संस्कृत भाषा के उद्धारकों में भी थे। उनके यहां संस्कृत भाषा के 29 आचार्य नियुक्त थे। राजा साहब ने संस्कृत पाठशाला स्थापित की थी और छात्रवृत्ति की भी व्यवस्था की थी।

अंतिम अध्याय में चक्रधर समारोह पर पूर्ण विवरण के साथ विशद चर्चा है, उत्सव में शिरकत करने वाले छोटे–बड़े सभी कलाकारों का नामोल्लेख है। जिसमें इस कार्यक्रम की सार्वभौमिकता और राष्ट्रीय एकता पर प्रकाश पड़ता है। उपरोक्त छः अध्याय में राजा चक्रधर सिंह के प्रशासन, साहित्य, संगीत एवं नृत्य के प्रति उनके योगदान को समेटने का प्रयास किया गया है।

मेरे इस शोध प्रबन्ध में मेरे गुरूदेव डॉ. रामगोपाल शर्मा का स्नेह और स्वस्थ मार्गदर्शन ही पाथेय रहा है, मैं उनका किन शब्दों में आभार प्रर्दशन

करूगां.....। मझले कुमार सुरेन्द्र कुमार सिंह और भानुप्रताप सिंह ने भी छोटे मोटे भेंट–वार्ता देकर मुझे उपकृत किया। मैं विशेष रूप से डॉ बलदेव साव जी का आभारी हूँ जिन्होंने मेरे इस शोध कार्य में विशेष मदद की।

अन्त मे मैं अपने पूज्य माता–पिता एवं मम्मा(मीनी माँ) को प्रणाम करता हूँ जिनके वात्सल्य से यह सब संभव हो सका। मैं अपनी जीवन संगिनी श्रीमती मैथिली बारीक,बिटिया भावना(मानसी) एवं बेटे रिषभ(रिशु) को हार्दिक धन्यवाद प्रदान करता हूँ जिन्होनें अपने आधिकारों का त्याग करके शोध कार्य हेतु पूर्ण समय प्रदान किया।